ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 12, Issue 11, Nov 2022 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

गाँधी जी का शिक्षा विमर्श और नई शिक्षा नीति

डॉ० मोनू सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी,

चौ० चरण सिंह राजकीय महाविद्यालय,

छपरौली, बागपत

गाँधी एक युग पुरुष थे। वे स्वतंत्रता आन्दोलन के नायक तो थे ही, इसी के साथ वे एक उच्च कोटि के चिन्तक भी थे, जिन्होंने अपने समय की सभी समस्याओं पर गहन चिन्तन–मनन किया। उन्होंने आजादी की लड़ाई का ताना–बाना कुछ इस तरह से बुना कि देश आजाद होते–होते सभी समस्याओं से मुक्ति पा सके। गाँधी जी ने देश की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर गूढ़ चिन्तन–मनन किया। यदि थोड़ी गहनता और सूक्ष्मता से देखा जाए तो इन सभी समस्याओं का समाधान बुनियादी शिक्षा में निहित है, इसलिए गाँधी चिन्तन का मूल उनकी बुनियादी शिक्षा में है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्द स्वराज 1909 में शिक्षा' नामक शीर्षक के अन्तर्गत शिक्षा पर विचार किया है। गाँधी शुष्क और नीरस शिक्षा के विरोधी थे। उनके लिए शिक्षा मात्र कागजी पुर्जा न होकर व्यावहारिक जीवन की पाठशाला थी। वे अक्षर ज्ञान को शिक्षा नहीं मानते थे, क्योंकि अक्षर ज्ञान से दुनिया को कोई व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता। उन्होंने 'हिन्द स्वराज' में स्वयं लिखा है– ''तालीम का अर्थ क्या है? अगर उसका अर्थ सिर्फ अक्षर ज्ञान ही हो, तो वह तो एक साधन जैसी ही हुई है। उसका अच्छा उपयोग भी हो सकता है, और बुरा उपयोग भी हो सकता है। एक शस्त्र से चीर–फाड़ करके बीमार को अच्छा किया जा सकता है और वही शस्त्र किसी की जान लेने के लिए भी काम में लाया जा सकता है। अक्षर–ज्ञान भी ऐसा ही है। बहुत से लोग उसका बुरा उपयोग करते हैं। यह बात अगर ठीक है तो इससे यह साबित होता है कि अक्षर ज्ञान से दुनिया को फायदे के बदले नुकसान ही हुआ है।''[प]

गाँधी जी का मानना था कि यदि अक्षर ज्ञान से जीवन के उपयोग में लाए जाने वाला कोई हुनर या कला विकसित नहीं होती जिसका उपयोग लोकहित में न किया जा सके तब उस अक्षर ज्ञान की क्या सार्थकता है? यह अक्षर ज्ञान आदमी का पेट नहीं भर सकता। वे प्रश्न पूछते हैं कि ''एक किसान ईमानदारी से खुद खेती करके रोटी कमाता है। उसे मामूली तौर पर दुनियावी ज्ञान है। अपने माँ–बाप के साथ कैसे बरतना, अपनी स्त्री के साथ कैसे बरतना, बच्चों के साथ कैसे पेश आना, जिस देहात में वह बसा हुआ है, वहाँ उसकी चाल–ढाल कैसी होनी चाहिए, उन सबका उसे काफी ज्ञान है। वह नीति के नियम, समझता एवं पालन करता है। लेकिन वह अपने दस्तखत करना नहीं जानता। इस आदमी को आप अक्षर–ज्ञान देकर क्या करना चाहते है? उसके सुख में आप कौन–सी बढ़ती करेंगे? क्या उसकी झोपड़ी या उसकी हालत के बारे में आप उसके मन में असंतोष पैदा करना चाहते हैं? ऐसा करना हो तो भी उसे अक्षर ज्ञान देने की जरूरत नहीं है। पश्चिम के असर के नीचे आकर हमने यह बात चलायी है कि लोगों को शिक्षा देनी चाहिए लेकिन उसके बारे में हम आगे–पीछे की बात सोचते ही नहीं।''[पप]

गाँधी जी के ये विचार किसी आदर्श की झोंक या भावुकता का परिणाम नहीं थे, वरन् यथार्थ की खुरदुरी भूमि से भारत की देशकाल परिस्थितियों के अनुरूप उपजे थे। गाँधी जी ने लन्दन से बैरिस्टरी की पढ़ाई की थी। वहाँ के शैक्षिक जगत से उनका घनिष्ठ परिचय था। औद्योगिक क्रांति से भी वे भलि–भाँति परिचित थे। यान्त्रिक सभ्यता का हश्र भी वे सूक्ष्मता और गहनता से देख रहे थे। इन सभी परिस्थितियों का आकलन कर उन्होंने शुष्क अक्षर ज्ञान और यान्त्रिक सभ्यता

का मुखर विरोध किया था। गाँधी की शिक्षा में भारत जैसे विशाल देश की जनता को सृजन की परम्परा से जोड़ने का सत्व निहित है। वे हर हाथ को काम के साथ जोड़ने के हिमायती थे। उन्होंने बुनियादी शिक्षा में ही बच्चों को किसी न किसी हुनर के साथ जोड़ने की वकालत की। गाँधी का मानना था कि एक ग्रामीण भारतीय जिसे हम निरक्षर कहते हैं, उसके पास अपने जीवन जीने का बेहतर सलीका है, जो उसे उसकी परंपरा से मिला है। उसे दुनियावी ज्ञान है, जो उसे जिन्दगी ने सिखाया, जो उसे प्रकृति ने सिखाया है। उसे नीति का भी भलि–भाँति ज्ञान है। वह अपने व्यवसाय में भी दक्ष है, फिर आप उसे निरक्षर कैसे कह सकते हैं? गाँधी पुस्तक पढ़ने और दस्तखत करने भर को साक्षर होना नहीं मानते थे, यदि यह साक्षरता नीति, अनुशासन, चारित्रिक दृढ़ता, ईमानदारी, सेवा, धैर्य, परदुखकातरता, सत्य, अहिंसा, अस्तेय और ब्रह्मचर्य की नींव खोखली कर रही हो, तो उस साक्षरता या शिक्षा की क्या सार्थकता है। गाँधी पश्चिमी समाज के शिक्षित होने के परिणाम देख रहे थे। यूरोपीय समाज ने शिक्षित होकर पूरी दुनिया में भारत सहित अपने अधीन तमाम उपनिवेशों में कैसे आचरण और कार्य संस्कृति को जन्म दिया। ब्रितानी हुकूमत की बर्बरता और क्रूरता को हम बखूबी जानते हैं। आधुनिक काल के दो विश्वयुद्ध सबसे शिक्षित लोगों के मध्य लड़े गए। गाँधी पश्चिम की शिक्षा से न तो आतंकित होते और न ही उसके व्यामोह में फंसते, वरन् वे भारत के लिए शिक्षण पद्धति भारतीय परिवेश से ही चुनते हैं। भारत की शिक्षा व्यवस्था प्राचीनकाल में उच्च शिखर पर थी। हमारे यहाँ नालन्दा, तक्षशिला, वल्लभी, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय थे, जहाँ तमाम देश–दुनिया के विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। यह शिक्षा मात्र किताबी न होकर सृजन के विविध क्षेत्रों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी थी। इस शिक्षा पद्धति में मानव का चतुर्दिक विकास होता था। यह शिक्षा व्यवस्था कौशल, आत्मानुशासन और मानवीय गुणों पर अवलंबित थी। गाँधी जी का शिक्षा को लेकर स्वयं मानना था कि ''अभी तक हमने सिवा इसके कुछ और नहीं किया है कि बच्चों के दिमाग में तरह–तरह की जरूरी और गैर जरूरी जानकारी ठूंसते रहे। उससे उनके सही विकास में मदद हो रही है, या नहीं इसका हमने ख्याल नहीं किया। अब यह आगे नहीं चलना चाहिए। अब हम किसी हाथ–उद्योग के आधार पर उनको शिक्षा देना शुरू करें। हाथ उद्योग, शिक्षा के साथ चलने वाली प्रवृत्ति नहीं हो बल्कि बौद्धिक शिक्षा का माध्यम हो। सात वर्ष की पढ़ाई के बाद जब बच्चा बाहर निकले तो वह अपने परिवार का कमाऊँ अंग बन जाए। यही तो आज भी गांव में होता है। परिवार की जीविका कमाने में वहाँ बच्चे अपने माता–पिता की मदद करते ही हैं। वे जानते हैं कि वे अगर काम नहीं करेंगे तो उनके माता–पिता, भाई–बहन क्या खायेंगे? यह विचार पैदा हो जाना ही स्वयं अपने आप में मूल्यवान शिक्षण है। इस काम को राज्य करें। सात वर्ष की उम्र में वह बच्चे की पढ़ाई शुरू करें और चौहदवें वर्ष में उसे एक कमाऊ सदस्य बनाकर लौटा दें। इस प्रकार आप दो काम एक साथ कर देते हैं। बच्चे की पढ़ाई भी हो जाती है और बेकारी की जड़ भी काट देते हैं। आप उसे कोई–न–कोई उद्योग सिखावेंगे, और उस उद्योग के निमित्त से आप उसे मन, बुद्धि, इन्द्रियों तथा शरीर का उपयोग और कला सबका शिक्षण दे देंगे।''[पपप]

गाँधी जी एक दूरदर्शी व्यक्ति थे। उनका चिन्तन वायवीय चिन्तन नहीं था, न ही पश्चिम की नकल था। उन्होंने समूचे भारत की स्थिति का जायजा रेल के तीसरे दर्जे में बैठकर और भारत के सुदूरवर्ती गाँवों में घूम–घूमकर स्वयं किया था। वे उस समय में भी भारत में बेरोजगारी की समस्या को देख रहे थे। वे भारत के मिज़ाज को भी भलि–भाँति जानते थे। इसी के अनुरूप उन्होंने बुनियादी शिक्षा में व्यावहारिक कौशल को जोड़ा था।

नई शिक्षा नीति 2020 में भी गाँधी जी के इसी विचार को आत्मसात् करने की बात कही गयी है। नई शिक्षा नीति में स्कूली स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर जोर दिया गया है, जिससे छात्रों को व्यावहारिक कौशल और

व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। यह शिक्षा नीति शैक्षणिक और व्यावसायिक धाराओं के निर्बाध एकीकरण पर बल देती है। गाँधी जी शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण और अनुशासन पर बहुत जोर देते थे। उनका मानना था कि पाश्चात्य शिक्षा और यान्त्रिक सभ्यता विशुद्ध रूप से स्वार्थ पर अवलम्बित है। गाँधी जी की शिक्षा अच्छे नागरिक बनाने पर बल देती है। गाँधी जी की शिक्षा इकहरी न होकर बहुत ही संश्लिष्ट है। इसमें सत्य, अहिंसा, आत्मानुशासन और नैतिक मूल्यों का प्रबल आग्रह है। उनका मानना था कि शिक्षा को सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक आचरण की भावना से सम्पृक्त होना चाहिए। नई शिक्षा नीति में भी नैतिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्द्धन पर विशेष बल दिया गया है। इस शिक्षा नीति में छात्रों के बीच सहानुभूति, सम्मान और अखण्डता जैसे मूल्यों को स्थापित करने की बात कही गयी है। गाँधी जी ज्ञान की मूर्ति बनाने के बिल्कुल पक्ष में नहीं थे और न ही वे नीति विहीन शिक्षा को स्वीकार करते थे। उनका मानना था कि अक्षर ज्ञान से पूर्व हमें नीति की नींव मजबूत कर लेनी चाहिए, जिससे कि उस पर बुलन्द इमारत खड़ी की जा सके– ''मैंने अक्षर ज्ञान को (हर हालत में) बुरा नहीं कहा हैं। मैंने तो इतना ही कहा है कि उस ज्ञान की हमें मूर्ति की तरह पूजा नहीं करनी चाहिए। वह हमारी कामधेनु नहीं है। वह अपनी जगह पर शोभा दे सकता है और वह जगह यह है : जब मैंने और आपने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, जब हमने नीति की नींव मजबूत बना ली हो, तब अगर हमें अक्षर ज्ञान पाने की इच्छा हो तो उसे पाकर हम अच्छा उपयोग कर सकते हैं। वह शिक्षा आभूषण के रूप में अच्छी लग सकती है। लेकिन अक्षर ज्ञान का अगर आभूषण के तौर पर ही उपयोग हो, तो ऐसी शिक्षा को लाज़िमी करने की हमें जरूरत नहीं। हमारे पुराने स्कूल ही काफी है। वहाँ नीति को पहला स्थान दिया जाता है। वह सच्ची प्राथमिक शिक्षा है। उस पर हम जो इमारत खड़ी करेंगे वह टिक सकेगी।''[पअ]

गाँधी जी का शैक्षिक चिन्तन इतना व्यापक था कि उसमें राजनीति, साहित्य एवं कलाओं से स्वावलम्बन की परिकल्पना चरितार्थ होती थी। उन्होंने भारतीय शिक्षा यानी तालीम का तकली से परिचय कराया। गाँधी तकली और चरखे को स्वावलम्बन और कर्म से जोड़ना चाहते थे। रमेश दवे ने अपने लेख 'गाँधी का नवाचार' में इस सन्दर्भ में बड़ी समीचीन टिप्पणी की है ''भारत को नई तालीम से शिक्षित, संस्कारित और कर्मशील पीढ़ी बनाकर ऐसे समाज की रचना के प्रति संकल्पित था, जो एक स्वावलम्बी, स्वतंत्र स्वाभिमानी और चरित्रवान समाज हो। बापू को इस समाज की रचना की ताकत तकली और चरखे में दिखाई दी थी इसलिए प्रारम्भिक शिक्षा के लिए बनाई गई समिति के समक्ष नई तालीम का तात्पर्य प्रारम्भिक शिक्षा में तकली और चरखे शिक्षा के प्रतीक बन गए। इस प्रकार गाँधी के विचारों से उस बुनियादी शिक्षा का जन्म हुआ था जिसमें बच्चों की शिक्षा की बुनियाद किताब के बजाय कर्म से हो। चीजों की बजाय चेतना और चरित्र से हो, और जिसमें खेत मे खड़े किसान से लेकर देश के हर जवान तक की स्वेच्छा से भागीदारी हो।''[अ]

गाँधी के यह विचार अकस्मात् पैदा नहीं हुए थे वरन् वे भारत की प्राचीन गुरूकुल शिक्षा पद्धति से भलि–भाँति परिचित थे। भारत की गुरुकुल शिक्षा पद्धति की नींव नैतिकता, आध्यात्मिकता संयम और कौशल पर टिकी थी। गुरूकुल में प्रत्येक शिक्षार्थी को गुरुकुल या गुरू के घर में अन्तःवासी होकर रहना पड़ता था, जहाँ उसे जीवन के सभी बुनियादी कार्य जैसे सफाई, आरोग्य, खाना–पकाना, लकड़ी चुनना, गुरु की सेवा करना आदि सब कुछ अनिवार्य था। गुरुकुल में शास्त्र के साथ–साथ शस्त्र विद्या, योग विद्या, ज्योतिष एवं ललित कला एवं जीवन के उपयोग में आने वाली विभिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। गुरुकुल से इतर भी भारत की शिक्षा पद्धति लिखित या दस्तावेजी रूप में न होकर वाचिक या मौखिक रूप में ही थी। भारत को श्रुति परम्परा का देश कहा गया है। वेदों का सृजन और संरक्षण भी एक दीर्घ अवधि तक वाचिक या

मौखिक रूप में ही होता रहा है, इसलिए वेदों को श्रुति भी कहा गया है।

भारत गाँवों का देश है, और हमारे गाँव स्वयं में एक स्वायत्त इकाई थे। ये अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं ही करते थे। यहाँ शिक्षा का शुष्क और नीरस ज्ञान न होकर मौखिक एवं वाचिक ज्ञान था, जो जीवन उपयोगी था, जैसे एक गाँव में ही लुहार, कुम्हार, सुनार, चर्मकार, जुलाहे, नाई, धोबी, बुनकर आदि होते थे और इनका कला कौशल पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहता था और इस कौशल के बल पर गाँव स्वयं में स्वावलम्बी थे। स्वावलम्बन की इसी प्रक्रिया को अंग्रेज शिक्षा शास्त्री ऐडम ने 'गोल्डन ट्री' कहा था, जिसने 1787 ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कहने पर ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए भारत में शिक्षा का सर्वेक्षण किया था। वरिष्ठ आलोचक अरूणेश नीरन ने अपने लेख में इस सन्दर्भ में बड़ी सार्थक टिप्पणी की है– ''सन् 1787 ई० में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने भारत की शिक्षा व्यवस्था का सर्वेक्षण करने के लिए शिक्षाशास्त्री ऐडम को भेजा था। उसने कलकत्ता, बंबई और मद्रास प्रेसिडेन्सीज के एक लाख विद्यालयों का सर्वे करके कंपनी को जो रिपोर्ट भेजी उसमें लिखा, 'भारतीय शिक्षा व्यवस्था एक गोल्डेन ट्री' है, जब तक उसे काटा नहीं जाएगा तब तक भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना असम्भव है। उसने देखा कि हर दो मील पर विद्यालय है, जिसका संचालन गाँव और कस्बे के नागरिक कर रहे हैं और वहाँ अक्षर के माध्यम से कम वाचिक परम्परा के द्वारा शिक्षा दी जा रही है। काष्ठ कला, लौह कला, भवन निर्माण कला के विशेषज्ञ, लेकिन अक्षरविहीन, अध्यापक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उस शिक्षा प्रणाली में अक्षर से ज्यादा महत्त्व हाथ और उसके हुनर का है।''[अप]

अरूणेश नीरन की यह टिप्पणी गाँधी जी के शैक्षिक विमर्श और भारत की वाचिक परम्परा का बखूबी परिचय देती है। गाँधी की बुनियादी शिक्षा में इसी वाचिक परम्परा को बचाने की संजीदा पहल दिखाई देती है। इसलिए गाँधी अपने सम्पूर्ण चिन्तन में भारत के सन्दर्भ में यान्त्रिक सभ्यता के बरक्स लघु और कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बल देते हैं। विदेशी के स्थान पर स्वदेशी का विचार रखते हैं। गाँधी जानते हैं, कि लघु और कुटीर उद्योगों से एक तो पूँजी का केन्द्रीकरण नहीं होगा। पूँजी एक हाथ में नहीं आएगी, क्योंकि एक हाथ में पूँजी आने से पूँजी निरंकुश बन जाती है। उनका मानना था कि पूँजी से पूँजी बनाना आसान है, किन्तु उससे पूँजी 'आदमखोर' हो जाती है। वह अनेकानेक बीमारियों और समस्याओं का कारण बनती हैं जबकि श्रम से कमाई गई पूँजी मानवीय रहती है। दूसरा, लघु एवं कुटीर उद्योगों से भारत की बहुसंख्यक जनता को सृजन (उत्पादन) से जोड़ा जा सकेगा और उसमें आत्मानुशासन, स्वावलम्बन एवं नैतिक मूल्यों का विकास भी हो सकेगा। गाँधी अपने समय में यूरोप और अमेरिका की औद्योगिक एवं वैचारिक क्रान्तियों को देख रहे थे और उन क्रांतियों में मनुष्य की उपेक्षा और अवनति को भी भलि–भाँति महसूस कर रहे थे। गाँधी को कई बार विज्ञान विरोधी या यान्त्रिक विरोधी होने की तरह देखा जाता है, किन्तु यह गाँधी शिक्षा का सतही पाठ है। उनकी चिन्ता समूची मनुष्य जाति की चिन्ता है। कहीं इस यान्त्रिक सभ्यता में मनुष्य ही तो निरर्थक होकर नहीं रह जाएगा। विनोद साही ने अपने लेख 'गाँधी और पश्चिमी क्रांतियाँ' में गाँधी की इसी चिन्ता को अभिव्यक्त किया है– ''यूरोप और अमेरिका की विविध क्रांतियाँ यहाँ के लिए ही नहीं अपितु दुनिया के सभ्यतामूलक विकास के अगले पड़ावों की तरह देखी जाती हैं। गाँधी पूछते हैं कि उनका मकसद क्या है? तीव्र आर्थिक विकास और उसकी वजह से मुमकिन होने वाला समाज–सांस्कृतिक विकास ये दो उसके बुनियादी सरोकार हैं। पर गाँधी को मनुष्य की फिक्र है। वे समझना चाहते हैं कि तीव्र आर्थिक विकास द्वारा संभव होने वाले समाज–सांस्कृतिक विकास के केन्द्र में मनुष्य होता है या नहीं? गाँधी की मूल चिन्ता मनुष्य की चेतना के मानवीय अंतर्विकास की है।''[अपप]

गाँधी जी अपने शैक्षिक चिन्तन में अभिव्यक्ति का सवाल भी उठाते हैं। उनकी स्वराज की अवधारणा में स्वभाषा का

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 12, Issue 11, Nov 2022 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

प्रश्न भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। गाँधी स्वयं अंग्रेजी भाषा का ज्ञान रखते थे, किन्तु वे भाषा के प्रश्न को विकास के साथ नत्थी कर देते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि कोई भी बच्चा अपनी मातृ भाषा में ही तीव्रता से सीखता है। उसकी मौलिकता, रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति और उन्मुक्त चिन्तन अपनी भाषा में ही सम्भव है। विदेशी भाषा में उसकी रचनात्मकता कुन्द हो जाती है। इसलिए वे बार–बार मातृ भाषा में शिक्षा देने की वकालत करते हैं। वे अंग्रेजी भाषा में शिक्षा दिए जाने को गुलामी जैसा मानते हैं, उन्होंने यंग इण्डिया में इस सन्दर्भ में बड़ी माकूल टिप्पणी की है ''करोड़ों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। क्या यह कम जुल्म की बात है कि अपने देश में मुझे इंसाफ पाना हो, तो अंग्रेजी भाषा का उपयोग करना पड़ेगा। यह गुलामी की हद नहीं तो क्या है? हिन्दुस्तान को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग हैं। विदेशी भाषा द्वारा जो शिक्षा पाने में जो बोझ दिमाग पर पड़ता है, वह असह्य हैं। यह बोझ केवल हमारे ही बच्चे उठा सकते हैं, पर उसकी कीमत उन्हें चुकानी ही पड़ती है। इससे हमारे ग्रेजुएट निकम्मे और कोरे नकलची बन जाते हैं।''[अपपप]

गाँधी जी स्वभाषा के प्रश्न को बहुत गम्भीर मानते थे। उनका मानना था कि किसी भी देश का विकास उसकी अपनी भाषाओं के विकास के साथ ही सम्भव है। अपने अलग–अलग मंचों से, सन्दर्भों से इस बात को पुष्ट किया है कि किसी भी बच्चे का विकास उसकी मातृभाषा में ही सम्भव है। उन्होंने एक जगह कहा भी है– ''मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हों मैं इससे उसी तरह चिपटा रहूँगा, जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से। वह मुझे जीवनदायिनी दूध दे सकती है। अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है, जिसकी वह हकदार नहीं है तो मैं उससे सख़्त नफरत करूँगा। वह कुछ लोगों के सीखने की चीज़ हो सकती है, लाखों–करोड़ों के नहीं।''[पग]

नई शिक्षा नीति में भी स्थानीय भाषाओं एवं सांस्कृतिक संरक्षण की बात कही गई है। नई शिक्षा नीति स्थानीय भाषाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करती है, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर। यह क्षेत्रीय संस्कृतियों और भाषाओं के संरक्षण को बढ़ावा देती है। गाँधी जी अपनी बुनियादी शिक्षा के माध्यम से भारत की वाचिक और पारम्परिक शिक्षा के गोल्डन ट्री को फिर से स्थापित करने की बात करते हैं, जिस **'गोल्डन ट्री'** को अंग्रेजों ने अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए अपनी संस्कृति को बढ़ावा देने, भारत पर राज्य करने के उद्देश्य से बहुत ही सुनियोजित तरीके से काट डाला था। इसलिए लन्दन के चैथम हाउस ब्रिटिश मीडिया को उन्होंने बहुत खरी–खोटी सुनाई थी। अरुणेश नीरन ने अपने लेख में इस घटना का उल्लेख किया है– ''लंदन के चैथम हाउस में ब्रिटिश मीडिया से घिरे हुए महात्मा गाँधी बैठे हुए थे और उनके ऊपर प्रश्नों की बौछार हो रही थी। गोलमेज सम्मेलन के पहले उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य को इतनी खरी–खरी सुनाई थी कि उससे पूरा ब्रिटेन आन्दोलित हो गया था। एक पत्रकार ने प्रश्न किया, 'आप ब्रिटेन से इतना नाराज क्यों है?' गाँधी ने उत्तर दिया, 'ब्रिटेन ने हमारे देश को उपनिवेश बनाया, हमें लूटा, हमारा दमन किया, इसके लिए मैं उन्हें क्षमा कर सकता हूँ। उनके अत्याचारी शासन के लिए मैं उन्हें क्षमा कर सकता हूँ, लेकिन उन्होंने हमारी शिक्षा के 'गोल्डेन ट्री' को काट डाला, इसके लिए मैं उन्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता।''[ग]

गाँधी जी चिंतन में शिक्षा के उसी गोल्डन ट्री को पुनर्स्थापित पुनजीर्वित करने की सार्थक पहल दिखाई देती है। 21वीं सदी में आज जब मानव जाति ने खूब भौतिक तरक्की कर ली, मनुष्य सूर्य और चाँद की दूरिया नाप रहा है, किन्तु फिर भी मानव जाति अनेकानेक समस्याओं के दलदल में धंसी नजर आती है। हमने अक्षर ज्ञान तो प्राप्त किया, सूचनाओं का अम्बार भी हमने लगा दिया। यांत्रिक सभ्यता के नित नए अविष्कार हमें विस्मित कर रहे हैं किन्तु फिर भी मानव जाति का

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 12, Issue 11, Nov 2022 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

चारित्रिक पतन, चहुँ ओर हिंसा का दावानल, युद्ध की विभीषिका में दहकता विश्व, लालची मनुष्य के दोहन से कराहती प्रकृति, स्वार्थों की बलि देवी पर होम होते संबंध, पूँजीवाद का तांडव, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, राजनैतिक अवमूल्यन, सांस्कृतिक विघटन, धार्मिक उन्माद, मानवीय मूल्यों की हत्या चहुँ ओर नजर आती है। आखिर ऐसी शिक्षा की अन्तिम परिणति क्या और कैसी होगी? यह दृश्य कल्पना में भी भयभीत करता है। ऐसे विषम समय में गाँधी की शिक्षा और उस शिक्षा के साथ सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, श्रम की महत्ता, आत्मानुशासन, चारित्रिक दृढ़ता, नीति की फिर से आवश्यकता है। गाँधी की शिक्षा में देशकाल परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन तो किया जा सकता है, किन्तु आधारभूत मूल्य यथावत रहने चाहिए, क्योंकि ये शाश्वत मूल्य हैं, जिसमें न केवल भारत अपितु समूचे विश्व की कल्याण कामना निहित है।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारत की नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के प्रति देश के दृष्टिकोण में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है। इस नीति का लक्ष्य एक समावेशी, लचीली और बहुविषयक शिक्षा प्रणाली तैयार करना है। यह शिक्षा प्रणाली हस्तकौशल को, नैतिक मूल्यों को, भावनात्मक पहलुओं को मातृभाषाओं को और अपनी संस्कृति को साथ लेकर चलने की बात करती है। दिलचस्प यह है कि नई शिक्षा नीति के कई पहलुओं पर महात्मा गाँधी के विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। नई शिक्षा नीति एवं गाँधी का शैक्षिक विमर्श कई बिन्दुओं पर एक–दूसरे के पूरक जान पड़ते हैं, जो एक अच्छी पहल है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[प]. महात्मा गाँधी, हिन्द स्वराज, पृ०सं० 66

[पप]. वही, पृ०सं० 66

[पपप]. हरिभाऊ उपाध्याय, बापूकथा 1920–1948, पृ०सं० 177–178

[पअ]. महात्मा गाँधी, हिन्द स्वराज, पृ०सं० 67

[अ]. रमेश दवे, लेख गाँधी का नवाचार, जनसत्ता–2019, पृ०सं० 07

[अप]. विमल झा, पुस्तक वार्त्ता, लेख अरूणेश नीरन– हिन्दी स्वर में शिक्षा विमर्श, पृ०सं० 8

[अपप]. लेख विनोदशाही, जनसत्ता 23 जनवरी, पृ०सं० 6

[अपपप]. गाँधी, यंग इण्डिया, 06.10.1921

[पग]. गाँधी, यंग इण्डिया, 07.12.1921

[ग]. अरूणेश नीरन, लेख हिन्दी स्वराज में शिक्षा विमर्श, पृ०सं० 7